पर्यावरण संरक्षण में मीडिया की भूमिका

डॉ. जी. शान्ति
असोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
एस. नवीनाश्री
स्नातकोत्तर छात्रा
श्री अभिरामी इल्लम, 2/179 B2, वनप्रस्था रोड़
वड़वल्लि, कोयम्बत्तूर – 641 041, तमिलनाडु
मोबाइल – 9443652088

शोधसार–

आधुनिक समाज में विकास अनिवार्य है । हालाँकि, जब विकास स्थायी नहीं होता है और इसमें पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों को ध्यान में नहीं रखा जाता है, तो यह मानव जाति के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा करता है । मनुष्य प्रकृति का एक भाग है; वह स्वार्थी कारणों से प्रकृति का तेजी से शोषण कर रहा है । मनुष्य और प्रकृति जीवन समर्थन प्रणाली का एक जटिल अंश हैं जिसमें पाँच तत्व शामिल हैं– वायु, जल, भूमि, वनस्पति और जीव–जन्तु । किसी एक तत्व के ख़राब होने से शेष चार तत्वों पर इसका प्रभाव पड़ता है । अल्पकालिक गिरावट अपने आप ठीक हो सकती है, लेकिन अगर यह लंबे समय तक जारी रहती है तो इसमें पूरी प्रणाली को असंतुलित करने की क्षमता होती है । यह अत्यंत महत्वपूर्ण या हमारी नैतिक जिम्मेदारी भी है । आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी को सुरक्षित रखना है ।

पर्यावरण दो शब्दों के मेल से बना है– 'परि' और 'आवरण' 'परि' का अर्थ है 'चारों ओर' तथा 'आवरण' का अर्थ है 'लबादा' या 'घेरने वाला'। जिसका अर्थ है हमारे चार और उपस्थित सभी वस्तुएँ हमारा पर्यावरण है । हमारा जल, पेड–पौधे, मिट्टी, जंगल आदि सब हमारा पर्यावरण है ।

कहना उचित है कि पर्यावरण वह सब कुछ है जो जीव–जंतुओं को चारों ओर से घेरे रहता है । उसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित करता है । विभिन्न मानवीय क्रियाकलापों के दुष्परिणाम स्वरूप प्राकृतिक गुण में परिवर्तन आ रहा है और वह नष्ट हो रही है । पर्यावरण का नैसर्गिक गुणवत्ता का ह्रास होने का प्रभाव जीवन चक्र को अधिक मात्रा में प्रभावित करता है । पर्यावरण प्रदूषण मानवीय क्रियाओं के अपशिष्ट उत्पादों से मुद्रव्य एवं ऊर्जा का परिणाम है । यह जल, मिट्टी, वायु की अवांछित संघहन होने की स्थिति है जिसका असर जीवों पर पडता है । यहाँ तक की हमारा जल, वायु, थल भी प्रदूषण से बच नहीं पाया ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार "जब हमारे बाहरी वातावरण में इस प्रकार के पदार्थ मिल जाते हैं, जिनसे वह मानव तथा उसके पर्यावरण के लिए खतरा बन जाता है, तो इस अवस्था को प्रदूषण कहते हैं ।"[1]

पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करने में माध्यमों के साथ–साथ मीड़िया की भी अहम भूमिका है । पिछले कुछ वर्षों में भारत में पर्यावरण की रक्षा के लिए कितने आंदोलन शुरू हुए हैं और बाद में, मीडिया पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने और समाज के लिए बेहतर जीवन बनाने के लिए विभिन्न अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण समझौतों के बारे में कई जानकारी देता है ।

मानव का अपरिमित लालच, विज्ञान का विकास, अंधाधुंध दोहन के कारण तेज़ी से बदलते प्राकृतिक संसाधनों और हमारी अत्याधुनिक जीवन शैली के कारण आज हम प्रदूषण के दुष्चक्र में फंस चुके हैं। प्रदूषण की मात्रा दिन व दिन बढ़ जा रहा है, जिसके फलस्वरूप पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। आज हम विकास की ओर जिस तेज़ी से बढ रहे हैं, उसी तेज़ी से हम प्रदूषण के कारण विनाश की ओर बढ रहे हैं। जब हमारे पर्यावरण के नैसर्गिक गुण बदल जाते हैं और उसकी प्राकृतिक गुणवत्ता का ह्रास हो जाता है तो उसे भौतिक प्रदूषण कहते हैं, जो अग्रलिखित हैं –

1. स्थल प्रदूषण
2. जल प्रदूषण
3. वायु प्रदूषण
4. पर्वतीय प्रदूषण
5. अंतरिक्ष प्रदूषण
6. सागरीय प्रदूषण

जिन पदार्थों या कारकों की वजह से प्रदूषण उत्पन्न होता है, उसे 'प्रदूषक' कहते हैं। प्लास्टिक, कार्बन मोनोक्साइड, रासायनिक उर्वरक, सी.एफ.सी, कार्बन डाइऑक्साइड आदि प्रमुख तौर पर प्रदूषक माने जाते हैं जिसके कारण (ozone depletion) ओज़ोन के लिए भी हानिकारक सिद्ध होती है। पर्यावरण से अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं जैसे– वायु के प्रदूषित होने, कचरे का उचित प्रबंधन न कर पाना, जल का अभाव, गिरता हुआ भूजल स्तर, वनों का नष्ट होना तथा मिट्टी का मलिन होना आदि।

प्रदूषण के कारण आज मानव के स्वस्थ जीवन को खतरा पैदा हो गया है। आज वह हवा नहीं रही जिसमें मनुष्य एक लंबी साँस ले सकें। प्रदूषित जल के कारण मनुष्य को अनेक तरह की बीमारियाँ हो रही है। कृषि का भी विनाश हो रहा है, जिससे अनेक कृषकों की ज़िंदगी भी अव्यवस्थित हो रही है। वायु मंडल में ऑक्सीजन की कमी का सीधा प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य पर पडता है। प्रदूषण मानव की संपूर्ण विकास यात्रा को भी प्रभावित करता है।

"पत्र–पत्रिकाएं समाज का दर्पण होती हैं। समाज में जो हुआ और जो हो रहा है तथा जो होगा– इस त्रिकाल से संबंधित संपूर्ण हिसाव–किताब पत्र–पत्रिकाओं में चित्रित होता है। इस समस्त कार्य के पीछे केवल पत्रकार का विशेष हाथ होता है। पत्र–पत्रिकाओं में समाज को प्रभावित करने की जो क्षमताएं होती हैं, उन समस्याओं का सशक्त स्वर अथवा प्रणेता भी केवल पत्रकार ही है।"[1] अंग्रेज़ी के जर्नलिज़म का हिन्दी शब्द है पत्रकारिता। मानव जीवन में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण स्थान है। मानव जीवन के कई क्षेत्रों में पत्रकारिता का प्रयोग हैं। जैसे –

[1] एन सी पंत – पत्रकारिता का इतिहास – पृ.सं. आमुख

पत्रकारिता के ज़रिए समाज की सभी जीवन–घटनाओं का विश्लेषण प्रसारित होता है । केवल मनोरंजन नहीं बल्कि सत्य का उद्घाटन करके मानव द्वारा समाज को सही दिशा दर्शाने की कोशिश करते हैं और लोक कल्याण भी इसका उद्देश्य है । आजकल पर्यावरण और प्रदूषण एक ज्वलंत विषय है । पर्यावरण के प्रति जनता के दृष्टिकोण को प्रभावित करने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । मानव के बीच पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने में मीडिया की भूमिका बहुत अहम है, क्योंकि यह भारत के जटिल समाज के एक महत्वपूर्ण भाग तक पहुँचता है । इंटरनेट की तेज़ पहुँच और बहुतायत द्वारा प्रयोग इसमें मदद करती है । विश्व भर के लिए जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणवाद और हरित एवं पर्यावरण–अनुकूल कैसे बनें, इसके बारे में सीखने का प्रमुख संसाधन बन गया है। समकालीन युग में, लोगों के बीच पर्यावरण जागरूकता के लिए इंटरनेट सेवाओं का तेजी से उपयोग किया जा रहा है, ताकि वे तुरंत सार्वजनिक बातचीत में शामिल हो सकें । ट्विटर और फेसबुक जैसी सोशल मीडिया साइटें समाचार, सूचना और लेख साझा करती हैं, इसलिए पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में सीखने में रुचि रखने वालों के लिए यह सहारा देते हैं । इंटरनेट ने पारंपरिक मीडिया और नए मीडिया के अभिसरण के लिए जगह बनाई है, जिससे लोगों को पर्यावरणवाद के बारे में स्वदेशी ज्ञान तक पहुंचने के लिए एक उदार और बहुआयामी संसाधन तैयार हुआ है ।

यह ज्ञात है कि प्रिंट मीडिया, प्रसारण मीडिया और सामाजिक मीडिया पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर संवाद कर सकता हैं । मीड़िया लोगों को पर्यावरण की रक्षा के लिए जागरूक करता है । प्रिंट मीडिया के माध्यम से पर्यावरणीय मुद्दों के प्रसार में देरी हो सकती है परंतु प्रसार मीड़िया द्वारा नहीं । राज्य के अंदर फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर जैसे संदेशों की डिलीवरी में देरी न करें । वेब आधारित प्लेटफार्मों के कारण देश या दुनिया भर में उपलब्ध शोध और समीक्षाओं का यह संकलन लेख शिक्षाविदों, मीडिया और पत्रकारिता शोधकर्ताओं और अन्य अधिकारियों को जानने में मदद कर सकते हैं। स्थानीय और वैश्विक स्तर पर, पर्यावरण जागरूकता, मीडिया संचार की वर्तमान स्थिति और भूमिका ऑफ़लाइन में अधिक समाचार और ऑनलाइन मीडिया पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में अधिक जागरूकता पैदा कर सकता है और उनकी अधिक सुरक्षा कर सकता है ।

पिछले कुछ दशकों में मनुष्य की लगातार बढ़ती जरूरतों और लालच के कारण हमारी पर्यावरण स्थिति दिन–ब–दिन खराब होती जा रही है । पर्यावरणीय संकटों में जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, तूफान, हिमखंडों का पिघलना, बाढ़, अम्लीय वर्षा और वनस्पतियों और जीवों का विनाश शामिल हैं । मनुष्य का स्वास्थ्य अब पर्यावरणीय समस्याओं से बहुत खतरा है । प्रदूषण कई प्रकार के कैंसर, श्वसन रोगों और हृदय रोगों का मुख्य कारण है, जो कभी–कभी मौत का भी कारण बन सकते हैं । हर देश के लिए पर्यावरण संरक्षण महत्वपूर्ण है । आज हम पर्यावरण जागरूकता और ज्ञान की कमी के कारण इस समस्या का सामना कर रहे हैं । लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना इस समस्या का समाधान हो सकता है । पर्यावरण नीति और प्रबंधन में सरकारी कार्रवाई का सार्वजनिक समर्थन, पर्यावरण जागरूकता का लाभ है । शिक्षण और सूचनात्मक कार्यक्रम पर्यावरण जागरूकता बढ़ा सकते हैं । उदाहरणार्थ भारत में करीब 63 फॉरेस्ट कॉलेज हैं । इन्हीं संस्थानों के द्वारा कई शोध पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हो

रहा है । यह प्रणालियों के कारण पूरे संसार तक प्रकृति से संबंधित जानकारियाँ और पर्यावरण संबंधित समस्याओं से अवगत कराते हुए उसके समाधान को भी प्रस्तुत करते हैं । पत्रकारिता के द्वारा बाढ़ के समय बाढ़ की स्थिती में बाढ़ का के समाचार पूरी दुनिया में पहुंचता है । समाचार पत्रों में विशेष रूप में लेख छपने से लोगों को जागरूक करने में सहायता मिलती है । पत्रकार अपने चारों तरफ की समाचारों के प्रति जागरूक रहता है । अतः वह प्रकृति के प्रति भी अधिक सचेत दिखाई पडता है । समाचार पत्रों के संपादकीय में भी पर्यावरण से संबंधित विषयों को महत्व दिया जाता है ।

आज विश्व भर में पर्यावरण प्रदूषण एक महत्वपूर्ण समस्या बन गया है । बढ़ता औद्योगीकरण और शहरीकरण प्रदूषण का मुख्य कारण है । यदि इसे गंभीरता से नहीं लिया गया तो यह विश्व के समक्ष एक विकट समस्या उत्पन्न कर देगा । पर्यावरण संरक्षण का आशय है हमारी धरती को ओजोन क्षरण से बचाना, ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण से बचाना आदि । हमारे पर्यावरण को बचाना और संरक्षित करना प्रत्येक व्यक्ति और सरकार का भी दायित्व होना चाहिए । इसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए और इसका मुकाबला व्यक्ति, संस्थाओं और सरकार के संयुक्त प्रभाव से किया जाना चाहिए । पर्यावरण जागरूकता ही पर्यावरण संरक्षण का एकमात्र उपाय है ।

सहायक ग्रंथ सूची

1. डॉ. निशांत सिंह, सुरेन्द्र प्रताप सिंह– प्लास्टिक प्रदूषण : समस्या और प्रबंधन – अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003.
2. एन सी पंत– पत्रकारिता का इतिहास –तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002.
3. डॉ. सरोज यादव, डॉ. कुसुम यादव– पर्यावरण मुद्दे एवं नीतियाँ – नलंदा प्रकाशन, 2019.
4. अनुभा कौशिक, सी.पी. कौशिक– पर्यावरण अध्ययन– NEW AGE INTERNATIONAL PUBLICATIONS
5. डॉ.ए.एस.सुमेष – समकालीन हिन्दी साहित्य में पर्यावरण विमर्श – अमन प्रकाशन, कानपुर, 2016.

X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X